The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

लोक भाषा छत्तीसगढ़ी में छंद: एक संछिप्त परिचय

जीतेन्द्र कुमार वर्मा

शोधार्थी (नामांकन क्रमांक- SRUAD3528), श्री रावतपुरा सरकार विवि रायपुर (छ.ग.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18975586

छंद और छत्तीसगढ़ का संबंध अत्यंत गहरा और ऐतिहासिक है। जनश्रुति के अनुसार कौच पक्षी को लहूलुहान देखकर महर्षि वाल्मीकि के मुख से जो प्रथम छंद निकला, उसे दुनिया का पहला छंद माना जाता है, और यह पावन धरा छत्तीसगढ़ ही थी जहाँ से वह प्रस्फुटित हुआ। यही भूमि आगे चलकर महाकवि कालिदास की मेघदूत जैसी छंदबद्ध रचनाओं का आधार बनी। छत्तीसगढ़ या दण्डकारण्य, जो अनेक ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा, अपने भीतर छंद की परंपरा को समाहित किए हुए है। छत्तीसगढ़ की धरती पर कवि गोपाल मिश्र जैसे पिंगल शास्त्र के ज्ञाता हुए, जिनके काव्य आचार्य केशव की याद दिलाते हैं। उन्होंने 'जैमिनि अश्वघोष' नामक ग्रंथ में 56 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया। इसी तरह ईशान कवि और अन्य कई चारण कवियों ने भी छत्तीसगढ़ से अनेक छंदबद्ध रचनाएँ प्रस्तुत कीं। हिंदी साहित्य को छंदप्रभाकर और काव्यप्रभाकर जैसे दुर्लभ ग्रंथ देने वाले जगन्नाथ प्रसाद भानु भी छत्तीसगढ़ से ही थे। इससे स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ी साहित्य भी छंद से अछूता नहीं रह सकता। यहाँ छंदों की बहुलता है, जो लोक और शास्त्र दोनों रूपों में विद्यमान है। छत्तीसगढ़ी काव्य में छंदों का प्रयोग केवल साहित्यिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गहराई और परंपरा का भी परिचायक है। इसे जानना, पढ़ना और समझना आवश्यक है, क्योंकि यही छंद परंपरा छत्तीसगढ़ी साहित्य को कालजयी और विशिष्ट बनाती है।

भारतीय छंद परंपरा का उद्भव वेदों से माना जाता है, जहाँ मंत्रों और सूक्तों को लयबद्ध रूप देने के लिए छंदों का प्रयोग हुआ। आचार्य पिंगल का छंदशास्त्र इस परंपरा का प्रामाणिक ग्रंथ है। संस्कृत कवियों—कालिदास, भास और भवभूति—ने वर्णिक छंदों को परिष्कृत रूप दिया, जिनमें लघु-गुरु वर्णों का क्रम निश्चित होता था। बाद में हिंदी और अन्य बोलियों में मात्रिक छंदों का विकास हुआ, जो सहज, गेय और लोकाभिव्यक्ति के अनुकूल बने। छंद भारतीय काव्यशास्त्र का वह अनुशासन है जो कविता को लय, ताल और मधुरता प्रदान करता है। यह केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि भावों को गेय और प्रभावशाली बनाने की कला है। संस्कृत की 'चद्' धातु से निर्मित छंद का अर्थ है प्रसन्न करना, और यही इसकी मूल विशेषता है—कविता को आनंददायक और स्मरणीय बनाना। विद्वानों ने छंद को परिभाषित करते हुए बताया है कि इसमें मात्रा, वर्ण, यति, गति, नियम और समता का बंधन

होना आवश्यक है। भाषा शास्त्री डॉ धीरेंद्र वर्मा के अनुसार "अक्षर, अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा, मात्रा गणना तथा यति-गति आदि से संबंधित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य-रचना छंद कहलाती है।" पर छत्तीसगढ़ी में "छंद" कहने से 'बाँधने' का भाव बोध होता है। अर्थात् काव्य को मात्रा, यति और गति में बाँधना ही छंद है।

जीवन में नियम, अनुशासन और बंधन का बड़ा महत्व है। जैसे मनुष्य समाज के नियमों में बँधकर सामाजिक प्राणी कहलाता है, जैसे नदियों की धार को बाँधकर सिंचाई, बिजली और जीवनोपयोगी कार्य किए जाते हैं, जैसे बैलों को गाड़ी व हल में बाँधकर खेती की जाती है—उसी प्रकार शब्दों को भी गति, मात्रा और लय में बाँधकर काव्य की सुंदरता बढ़ाई जाती है। यही छंद है, और यही कारण है कि छंदबद्ध काव्य कालजयी होता है। तुलसी, सूर, कबीर, जायसी, चंदबरदाई, केशव, बिहारी, मतिराम और घनानंद जैसे कवियों की रचनाएँ आज भी जीवित और स्मरणीय हैं क्योंकि वे छंद में रची गईं। छंद ने ही उनकी कविताओं को गेयता, लय और स्थायित्व प्रदान किया, जिससे वे पीढ़ी दर पीढ़ी लोकमानस में गूंजती रही हैं। इसके नौ अंग—गति, यति, मात्रा, वर्ण, तुक, लय, गण, पद और चरण—कविता को संतुलन और सौंदर्य प्रदान करते हैं। लघु और दीर्घ वर्णों का क्रम, कलों का संयोजन और तुक का मेल कविता को गेयता और मधुरता से भर देता है। छंद दो मुख्य प्रकार के होते हैं—वर्णिक और मात्रिक। वर्णिक छंद अक्षरों की गिनती पर आधारित होते हैं, जैसे गायत्री और अनुष्टुप, जबकि मात्रिक छंद मात्राओं की गिनती पर आधारित होते हैं, जिनमें दोहा, चौपाई, कुण्डलिया और छप्पय प्रमुख हैं। ३२ मात्रा तक के छंद जाति छंद तथा ३२ से अधिक मात्रा के छंद दण्डक भी हैं। वेदों में गायत्री, त्रिष्टुभ और जगती जैसे छंदों का प्रयोग हुआ है, जिनसे आगे चलकर गाथा, चर्या, दोहा और सोरठा, रोला जैसे रूप विकसित हुए। यह विकास क्रमिक रूप से लगातार होता रहा और आज भी कविता की शुद्धता और प्रभाव के लिए छंद आवश्यक माना जाता है,क्योकि छंद व्याकरण का अभिन्न अंग है। छंद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि छंदबद्ध रचनाएँ आसानी से कंठस्थ हो जाती हैं और श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालती हैं। भारतीय साहित्य की किसी भी भाषा पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि छंद विधा ही सबसे प्राचीन विधा है। यह संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और अन्य बोलियों से होते हुए आज खड़ी बोली में भी प्रचलित है। हिंदी साहित्य के भक्ति काल को स्वर्णयुग कहा जाता है, क्योंकि इस युग में सृजित काव्य में जनचेतना, भाव, भजन और भक्ति तो थी ही, पर सबसे बड़ी बात यह थी कि लगभग सभी काव्य छंदबद्ध होते थे। यही कारण है कि वे लोगों के मन-मस्तिष्क में गहराई से घर कर जाते थे। छंदबद्ध काव्य की महत्ता के विषय में महावीर अग्रवाल जी ने प्रश्न किया कि वर्तमान कविताएँ पाठक वर्ग के लिए दिन-ब-दिन दुरुह होती जा रही हैं, इस पर आपके विचार क्या हैं? जवाब में जमुना प्रसाद कसार जी कहते हैं कि छंदहीन कविताएँ पाठकों को आकर्षित नहीं कर पा रही हैं। कविता की असली शक्ति उसकी लय और गेयता में है, जिससे पाठक सहज रूप से जुड़ते हैं। नई कविता तब तक प्रभावी रही जब तक उसमें सामाजिक सरोकार और संदेश था, लेकिन बाद में वह दुरूह और अर्थहीन हो गई। उनके अनुसार छंदबद्ध कविता संक्षिप्त, प्रभावशाली और गेय होती है, जबकि छंदहीन कविता गद्य जैसी प्रतीत होती है। इसलिए यदि

कविता में लय, ताल और गेयता नहीं होगी तो पाठकों का जुड़ाव कम होता जाएगा। सुमित्रानन्दन पंत जी भी लिख चुके हैं कि 'जिस प्रकार कविता में भावों का अन्तरस्थ हृत्स्पन्दन अधिक गम्भीर, परिस्फुट तथा परिपक्व रहता है उसी प्रकार छंदबद्ध भाषा में भी राग का प्रभाव, उसकी शक्ति, अधिक जाग्रत, प्रबल तथा परिपूर्ण रहती है।' कविता चाहे 'जितनी स्वच्छंद' हो 'छंद' से मुक्त नहीं हो सकती।

आदिकाल और भक्तिकाल में चंदबरदाई, जायसी, कबीर, सूर और तुलसी जैसे कवियों के भावप्रधान छंदबद्ध काव्य भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। रीतिकाल में केशव, बिहारी, घनानंद, मतिराम और बृंद आदि कवियों ने छंद को शिल्पगत दृष्टि से उत्कृष्ट बनाया। भारतीय साहित्य में शास्त्रीय छंदों के साथ-साथ लोक छंदों की परंपरा भी समृद्ध रही—राजस्थान में ढोला-मारू और वीर छंद, बंगाल में बाउल गान और जात्रा गान, तथा अन्य भाषाओं में अपनी-अपनी लोक छंदिक परंपराएँ विकसित हुईं। छत्तीसगढ़ी साहित्य में भी नाचा, रहस , रामलीला, कृष्णलीला व विभिन्न गाथा-गीतों में छंदों का प्रभाव है। यहाँ लोक छंद के रूप में ढोला-मारू गीत, भरथरी गीत, बसदेवा गीत, दीपावली पर गाए जाने वाले दोहे, ददरिया गीत, सुआ गीत, गौरा-गौरी गीत, बाँसगीत, सोहर गीत, जस गीत और लोरिक-चंदा जैसी विधाएँ लोकजीवन की भावनाओं, उत्सवों और परंपराओं को छंद में बाँधकर लयबद्ध रूप में व्यक्त करती हैं। मौखिक परंपरा पर आधारित गाथा युगीन साहित्य में रेवारानी गाथा, भरथरी गाथा, पंडवानी गाथा, अहिमन रानी गाथा, केवला रानी गाथा, फुलबासन गाथा, दसमत कैना, मोरध्वज गाथा, राजा हरिश्चंद्र गाथा, बसदेवा गीत और सरवन गाथा जैसी रचनाएँ छंदात्मक गेय रूप में प्रस्तुत होती थीं। इन गाथाओं में वीरता, प्रेम और भक्ति का भाव छंदों के माध्यम से लोकजीवन में गहराई तक उतारा गया।

भक्ति युग में छंदों का प्रयोग और भी सशक्त हुआ। कबीर के शिष्य धनी धर्मदास ने निर्गुण भक्ति की परंपरा को छत्तीसगढ़ में स्थापित किया। उनके दोहे और सार छंद आज भी लोकजीवन में गूंजते हैं। इसी प्रकार आमीन माता और संत गुरुघासीदास जी की लयबद्ध अमर वाणी भी जनमानस में गहराई से रची-बसी है। इस काल में भजन, गीत और कविताएँ छंदबद्ध होकर लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा बनीं। आधुनिक युग में छत्तीसगढ़ी साहित्य का लिखित रूप सशक्त हुआ। पंडित सुंदरलाल शर्मा की दानलीला जैसी रचनाओं ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को लिखित आधार दिया। उन्होंने दोहा, चौपाई और तोटक छंद का प्रयोग कर काव्य को शास्त्रीयता और गेयता दोनों प्रदान की। उनके साथ शुकलाल प्रसाद पांडे, कपिलनाथ कश्यप और नरसिंह दास जैसे कवियों ने भी विभिन्न छंदों में विपुल रचनाएँ कीं। स्वतंत्रता आंदोलन और भारत निर्माण काल में नारायण लाल परमार, कोदूराम ‘दलित’ और श्यामलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों ने छत्तीसगढ़ी छंदबद्ध साहित्य को नई ऊँचाई दी। कोदूराम ‘दलित’ ने शास्त्रीय छंदों को छत्तीसगढ़ी में स्थापित करने का श्रेय पाया। इस दौर में गेय छंदों के साथ-साथ मुक्त छंद भी लिखे गए। इस प्रकार भारतीय छंद परंपरा वेदों से आरंभ होकर संस्कृत, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित हुई और छत्तीसगढ़ी साहित्य में लोक तथा शास्त्रीय दोनों रूपों में सशक्त है। छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ़ की प्रमुख भाषा है, जो बोली से काफी ऊपर उठ

चुकी है। छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिंदी का अभिन्न अंग है, जिसे प्यारेलाल गुप्त जी ने अर्धमागधी की दुहिता तथा अवधी की सहोदरा कहा है।

भाषाविद डॉ. नरेंद्र देव वर्मा ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को गाथा युग, भक्ति युग और आधुनिक युग में विभाजित किया। बाद में नंदकिशोर तिवारी ने आधुनिक युग को प्रथम, द्वितीय और तृतीय सोपान में बाँटा। इसी प्रकार डॉ. विनय पाठक ने मौखिक और लिखित साहित्य के आधार पर विभाजन प्रस्तुत किया। डॉ. नरेंद्र देव वर्मा द्वारा किया गया गाथा युग और भक्ति युग का विभाजन लगभग सटीक है, क्योंकि उस समय लिखित साहित्य की न्यूनता थी। परंतु आधुनिक काल को और अधिक भागों में विभाजित करके पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि लिखित शिष्ट छत्तीसगढ़ी साहित्य आधुनिक काल में ही दिखाई देता है। इस दृष्टि से नंदकिशोर तिवारी और डॉ. विनय पाठक द्वारा किया गया काल विभाजन तर्कसंगत है। साथ ही राज्य निर्माण के बाद के काल को भी अलग से अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ी साहित्य बहुतायत मात्रा में लिखा जाने लगा। साहित्य की इस बढ़वार को देखते हुए वर्तमान काल को "उड़ान काल" कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार उड़ान भरने के लिए पहले कुछ दूरी तय करनी होती है, उसी प्रकार राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ी साहित्य धीरे-धीरे बढ़ते हुए आज डिजिटल युग में पूर्णतः आसमान में उड़ान भर रहा है और सभी विधाओं में लगातार पुष्ट हो रहा है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ी साहित्य की छंद परंपरा निरंतर विकसित होती रही है और वर्तमान में यह अपनी सशक्त पहचान के साथ नए आयाम प्राप्त कर रही है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा जी की दानलीला छत्तीसगढ़ी की प्रथम विशुद्ध छंदबद्ध पुस्तक है। आधुनिक काल के प्रथम दौर में छंदबद्ध सृजन करने वाले कवियों में सुंदरलाल शर्मा जी के साथ-साथ नरसिंह दास, शुकलाल प्रसाद पांडेय, महाकवि कपिलनाथ कश्यप, गोविंदराम विट्ठल, बंसीधर पांडेय, लोचनप्रसाद पांडेय, मुकुटधर पांडेय आदि छंदकारों का नाम शामिल है। दूसरे दौर के छंदकारों में कोदूराम दलित, नारायणलाल परमार, कुंजबिहारी चौबे, द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र', प्यारेलाल गुप्त, श्यामलाल चतुर्वेदी, दानेश्वर शर्मा, मेहतर राम साहू,विमलकुमार पाठक आदि कवियों का नाम आता है। तृतीय सोपान के छंदकारों में लक्ष्मण मस्तूरिहा, विद्याभूषण मिश्र, लाला जगदलपुरी, मुकुंद कौशल, केयूरभूषण, हरि ठाकुर, बुधराम यादव, गया प्रसाद बसेड़िया, डॉ. दशरथ लाल निषाद 'विद्रोही', आनंद तिवारी 'पौराणिक', नुतनप्रसाद शर्मा, शकुन्तला शर्मा, चोवाराम वर्मा 'बादल', रमेश चौहान, गंगादीन साहू आदि कवियों का नाम शामिल है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ी साहित्य के 'उड़ान काल' की बात करें तो डिजिटल दौर में लगातार बृहद मात्रा में छंदबद्ध काव्य लिखा जा रहा है। छत्तीसगढ़ी छंदबद्ध काव्य के उन्नयन में 'छंद के छ' का अहम योगदान है। डिजिटल मीडिया का उपयोग करते हुए अरुण कुमार निगम जी के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से लगभग 300 से भी अधिक लोग लगातार छंद में काव्य सृजन कर रहे हैं। 'छंद के छ' के साधकों द्वारा अब तक 50 से भी अधिक छंदबद्ध पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुछ नाम इस प्रकार हैं- अरुण

कुमार निगम - छंद के छंद; रमेश कुमार चौहान - आँखी रहिके अँधरा; दोहा के रंग; छंद चालीसा; छंद के रंग; शकुन्तला शर्मा - छंद के छटा; चोवाराम वर्मा "बादल" - छंद बिरवा; मनीराम साहू "मितान" - हीरा सोनाखान के; महा-परसाद; जगदीश "हीरा" साहू - सम्पूर्ण रामायण; छंद संदेश; रामकुमार चन्द्रवंशी - छंद सरोवर; आशा देशमुख - छंद चंदैनी; कन्हैया साहू "अमित" - जयकारी जनउला; फुरफुंदी; रामकुमार चन्द्रवंशी - छंद बगीचा; धनेश्वरी सोनी "गुलं" - बरवै छंद कोठी; सवैया छंद संग्रह; द्वारिका प्रसाद लहरे "मौज" - छंद गीत बहार; बोधनराम निषाद - अमृत ध्वनि छंद; छंद कटोरा; शुचि "भवि" - छंद फुलवारी; चोवाराम वर्मा "बादल" - सती सीताराम चरित(छंदबद्ध महाकाव्य); हमर स्वामी आत्मानन्द(चंपू काव्य)विजेन्द्र कुमार वर्मा - मनहरण घनाक्षरी; सुखदेव सिंह अहिलेश्वर - बगरै छंद अँजोर; बोधनराम निषाद - आल्हा छंद; छत्तीस विभूति आल्हा छंद में; मनीराम साहू "मितान" - गजामूंग के गीत; वीर हनुमान सिंह; इंजी गजानंद पात्रे 'सत्यबोध' - सवैया सरोवर; इन्द्राणी साहू "साँची" - फुलवारी; चोवाराम वर्मा "बादल" - माटी के चुकिया; मनीराम साहू "मितान" - राजिम सार; अजय अमृतांशु - ये कलजुग के गोठ; बोधनराम निषाद - छंद त्रिभंगी; पुरुषोत्तम ठेठवार - श्री मद्भागवत गीता; छप्पय छानी; पद्मा साहू "पर्णवी" - ममा गाँव जाबो; विजेन्द्र वर्मा - जयकारी के रंग; संगीता वर्मा - त्रिभंगी छंद धारा; बलराम चन्द्राकर - सौंधय साँस सुहावन संगति; महेन्द्र कुमार बघेल - होही तभे अँजोर; पुरुषोत्तम ठेठवार - जंगल मंगल धाम; संतोष मिरी- छंद कलश,केंवरा यदु 'मीरा'-छंद फुलवा आदि। इन छंदबद्ध पुस्तकों में प्रबंध काव्य, बाल काव्य, छंदबद्ध गीत- कविता, चंपू काव्य के साथ साथ महाकाव्य भी शामिल है। प्रारंभिक काल में कवियों ने कुछ ही छंद जैसे दोहा, चौपाई, कवित्त, तोटक आदि में काव्य रचना की है, किन्तु आज छत्तीसगढ़ के छंदकार लगभग सौ से भी अधिक शास्त्रीय छंदों(मात्रिक/वर्णिक) में निरंतर सृजन कर रहे हैं। छंदबद्ध पुस्तकों की संख्या में भी लगातार वृद्धि हो रही है।कुछ छंदमय काव्य पंक्तियां प्रस्तुत है-

1. जय हो गँउटनीन जय हो तोर। पोक्खा पोक्खा सेमी ला टोर।(बसदेवा गीत-अंत गुरुलघु- जयकारी छंद लय)
2. बाघ बाघ केहे रे संगी, बाघ कहाँ ले आय।(देवारी दोहा)
3. कहो कतेक दिन जिबों, काके करन गुमान।(दोहा- धनी धरम दास)
4. पाँव रचाए बीड़ा खाए। तरुवा मा टिकली चटकाए।(चौपाई छंद-सुंदरलाल शर्मा)
5. खबरदार हो जाव सबेच, अब छोड़ माल विदेशी गा।(लावणी-लोचनप्रसाद पांडेय)
6. देखे जाबों चल गियाँ, संगी ला जगाव रे।(कवित्त छंद-नरसिंहदास)
7. अपन भुलाके बल मा रहिके, सब स्वतंत्र हो जाओगा।(लावणी- गोविंदराम विट्ठलकर)
8. .भूखा भैसा ताता ताता, इही हमर पोथी पतरा।(लावणी-शुकलालप्रसाद पांडेय)
9. अब सुघ्घर प्रभाती गाबों। संगी आज तिहार मनाबों।(चौपाई-प्यारेलाल गुप्त।)
10. हाँसत कूदत मटकत रेंगें, बेलबेलहिन टूरी।(सार छंद-कोदूराम दलित)

11. घुप्प रातभर गिरगिर पानी। कइसे सहि लय भरे जवानी।(पदपादाकुलक छंद-विमल पाठक)
12. दुखिया मन मा राम हे, सुख में सब बेकार।(दोहा- गंगादीन साहू)
13. हमर ओरिया घाम घलइया, महल सरग ले ताने।(सार छंद-बुधराम यादव)
14. मोर मोर के रटन लगाथस, आये का धरके।(विष्णुपद छंद-अरुण कुमार निगम)
15. पंगत संगत आय, बड़े छोटे सब खावँय।(रोला-चोवाराम वर्मा'बादल)
16. बने जोर दे रोटी पीठा, अरसा खुरमी सोंहारी।(तातंक छंद-मनीराम साहू मितान)

सन्दर्भ सूची-

- गुप्त, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, रविशंकर शुक्ल विवि रायपुर, इलाहाबाद प्रेस, 1973
- साव, डॉ बलदेव, छत्तीसगढ़ी कविता के सौ साल, वैभव प्रकाशन,रायपुर, 2011
- साव, डॉ. बलदेव छत्तीसगढ़ी काव्य के कुछ महत्वपूर्ण कवि, 2013
- भानु, जगन्नाथ प्रसाद छंद प्रभाकर, अनुशीलन (संपादन सुशील त्रिवेदी) यश पब्लिकेशन, 2012
- वर्मा, पाठक, डॉ. विनोद, विनय, छत्तीसगढ़ी का सम्पूर्ण व्याकरण, वदान्या प्रकाशन बिलासपुर, 2024
- वर्मा, डॉ. नरेंद्रदेव, छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980
- वर्मा, डॉ. धीरेंद्र, ग्रामीण हिंदी बोली, हिंदी भवन प्रालि, इलाहाबाद, 1971
- शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, 2007
- तिवारी, नंदकिशोर, छत्तीसगढ़ी साहित्य की दशा और दिशा, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2004
- शास्त्री, रघुनन्दन, हिंदी छंद प्रकाश, न्यू इंडिया प्रेस दिल्ली,1952
- वर्मा,आचार्य धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोष, ज्ञानमंडल वाराणसी,1958
- 12. गौराहा, हुकुमचंद, छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन, मिश्रा पुस्तकालय, बिलासपुर,1973
- कर, डॉ, चितरंजन,छत्तीसगढ़ के गांधी पंसुंदरलाल शर्मा, रविशंकर शुक्ल विवि रायपुर, 2004